द्विरायतन यात्रा (नन्दिपुराण)

मणिकर्ण्या नरः स्नात्वा मणिकर्णोशमर्चयेत।
ततो वाप्यां नरः स्नात्वा विश्वेशं पूजायेत्तु यः।। ६
सर्व पापविनिर्मुक्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते। (क. द. पृ. १४६)

मणिकर्णिका में स्नान तथा मणिकर्णीश्वर (गोमठ में) का दर्शन-पूजन और ज्ञानवापी में स्नान तथा विश्वेश्वर का दर्शन-पूजन यही द्विरायतन यात्रा का क्रम हैः

© Copyright IGNCA, Sunil Jha
All rights reserved. No part of this may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or by any information storage and retrieval system, without prior permission in writing.